घर की तरफ आते हुए अगर,
कदम तेज़ न हुए,
मिलने की दीवानगी न दीखे,
कुछ और भी याद आ गया हो,
समय बाँचने की जद्दोजहद हो जाए,
तिल-तिल कर मर रहे है।

हर घंटे बच्चो की याद न आये,
हर पल पत्नी की बाते याद न रहे,
बच्चो की शैतानियाँ, प्रेम की अठखेलियाँ,
याद न रहे, न ही याद आने पर मुस्कान हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।

अपने आशियाँ का हर कोना,
ग़र खोने का निमंत्रण न दे,
अपने कमरे में प्रेम की चहक न हो,
रसोई में पडोसी के सब्जी की गमक न हो,
अपने वार्डरोब में रिश्तों के कपड़ो की धमक न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।

ड्राइंग रूम में चीजे थोड़ी बिखरी हो,
अध्ययन कक्ष में थोड़ा सलीका हो,
छत के गमलो का ख्याल न हो,
खिले फूलो पर ध्यान न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।

बच्चो के घुटनो की चोट,
पत्नी के बदन से हल्दी की महक,
अपने बटुवे के चिल्लरो की संख्या,
अगर जेहन में न हो,
तिल-तिल कर मर रहे है।

दोस्तों की बेसमय आवाजाही,
बच्चो का समय से सो जाना,
माँ का अनजाने में कमरे में आना,
अगर जीवन में नही दीख रहा, तो,
तिल-तिल कर मर रहे है।

बारिश की बूँदों ने भिगाया नही,
तेज़ हवाओ ने डराया नही,
कड़ाही के गर्म तेल से हाथ सूजा नही,
पानी की तेज़ी में नहाया नही,
तिल-तिल कर मर रहे है।

अकेले में जोर का हँसना और दौड़ना,
बच्चो के संग भी दौड़ लगाना,
पडोसी के बगिया से कुछ फूल चुराना,
परचून की दूकान से दो लेकर, एक बताना,
अगर कभी नही किया है,
तिल-तिल कर मर रहे है।

कभी किसी गरीब को बिठाया नही,
किसी निर्वस्त्र को पहनाया नही,
भूखे को खिलाया नही,
भटके को पहुँचाया नही,
रोते को खिलखिलाया नही,
दृष्टिहीन को दिखाया नही,

तिल-तिल कर मर रहे है।

किसान को सहलाया नही,

सैनिक को सम्हाला नही,

शिक्षक को समझा नही,

समाज को स्वीकारा नही,

तिल-तिल कर मर रहे है।

बस यही तो जीवन है। तिल-तिल कर और कोई नही मर रहा,

मर तो केवल हम ही रहे है। बड़ी अच्छी कहावत है,

"जा, जी ले अपनी ज़िंदगी"...